بسم الله الرحمن الرحيم

لا إله إلا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 05

# राह-ए-ईमान

मई
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

## विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन.................................................... 2
2. पवित्र हदीस .................................................... 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी.................................. 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत)......................................4
5. सम्पादकीय ..........................................................6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 5.4.2024)...........................................8
7. दुआ की कुबूलियत के ईमान वर्धक वृतांत.........................................12
8. मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु व जीवन की आस्था का महत्त्व..................16
9. शान्ति का अवतार..........................................................21

☆ ☆ ☆

**सम्पादक**
**फ़रहत अहमद** आचार्य

**उप सम्पादक**
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
**संपादक - मंडल**
फज़ल नासिर
**सेटिंग**
फ़रहत अहमद आचार्य
**टाइटल डिज़ाइन**
नूरुद्दीन नूरी
**मैनेजर**
अतहर अहमद शमीम M.A.
**कार्यालय प्रभार**
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
**Editor- 9115040806, Manager- 9815639670**

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

**वार्षिक मूल्य: 130 रुपए**

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

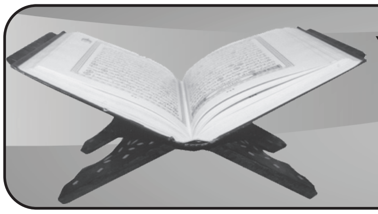

# पवित्र क़ुरआन

## (अल्लाह तआला के कथन)

وَ السَّارِقُ وَ السَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۳۹﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ
ظُلْمِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۴۰﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ
مَنْ يَّشَآءُ وَ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۱﴾

**अनुवाद:-** 39-और जो पुरुष चोर हो और जो स्त्री चोर हो उन दोनों के हाथ उस दोष के कारण काट दो जो उन्हों ने किया है। यह अल्लाह की ओर से दण्ड के रूप में है और अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है। 40-और जो व्यक्ति अत्याचार करने के बाद तौबः (पश्चाताप) कर ले और सुधार भी कर ले तो निश्चय ही अल्लाह उस पर कृपा करेगा। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है। 41-क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह वह सत्ता है कि आसमानों और ज़मीन की हुकूमत उसी की है। वह जिसे चाहता है अज़ाब देता है और जिसे (क्षमा करना) चाहता है क्षमा कर देता है और अल्लाह प्रत्येक बात का जिसे वह करना चाहे उस के करने का पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है। (अल माईदा : 39-41)

# पवित्र हदीस

## (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

**अनुवाद:**हज़रत हफस बिन आसिम बताते हैं कि मैं अपने चाचा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के साथ मक्का के सफर में था। रास्ते में उन्होंने नमाज़ ज़ुहर दो रकअत पढ़ाई इसके बाद वह अपने निवास स्थान पर आए और बैठ गए हम भी आपके साथ आकर बैठ गए। आपने उस तरफ देखा जिधर नमाज़ पढ़ाई थी। आपने देखा कि कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं। आपने पूछा ये लोग क्या कर रहे हैं? मैंने कहा सुन्नतें पढ़ रहे हैं। आपने फरमाया- अगर सुन्नतें पढ़नी थीं तो मैं पूरी नमाज़ पढ़ाता। ए भतीजे! मैं रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमम के साथ सफर करता रहा हूँ आप ने अपनी वफात तक सफर में दो रकअत फ़र्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी। मैं अबू बकर के साथ सफर में रहा हूँ उन्होंने भी कभी दो रकअत फर्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी, यहाँ तक कि वह फौत हो गए। उमर के साथ भी सफर करता रहा हूँ आपने भी अपनी वफात तक कभी दो रकअत फर्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी। फिर उसमान के साथ सफर पर रहा हूँ उन्होंने भी अपनी वफात तक इसी पर अमल किया। अल्लाह तआला का इरशाद है कि तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श (उसवा) में अच्छा नमूना है। (और यही सुन्नत है जिसका हर मुसलमान को पालन करना चाहिए)

(मुस्लिम किताबुस्सलात)

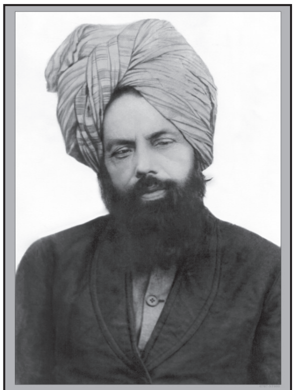

Hadhrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
The Promised Messiah

# हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

**हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-**

## दूसरों के पीछे नमाज़

सैयद अब्दुल्लाह साहिब अरब ने सवाल किया कि मैं अपने देश अरब में जाता हूँ वहाँ मैं उन लोगों के पीछे नमाज़ पढ़ूँ या न पढ़ूँ?

फ़रमाया: **"मेरी तस्दीक़ करने वालों के सिवा किसी के पीछे नमाज़ न पढ़ो"**

सैयद अब्दुल्लाह साहिब अरब ने कहा वे लोग आप अलैहिस्सलाम के हालात को नहीं जानते और उनको तब्लीग़ नहीं हुई। फ़रमाया: "उनको पहले तब्लीग़ कर देना फिर या वे तस्दीक़ करने वाले बन जाएँगे या झुठलाने वाले।" सैयद अब्दुल्लाह साहिब अरब ने कहा कि हमारे देश के लोग बहुत कट्टर हैं और हमारी क़ौम शिया है। फ़रमाया: तुम ख़ुदा के बनो। अल्लाह तआला के साथ जिसका मामला साफ़ हो जाए अल्लाह तआला ख़ुद उसका संरक्षक और प्रतिपालक हो जाता है।

## अब इस्लाम का मज़हब फैलेगा

फ़रमाया: आजकल सारे धर्मों के लोग जोश में हैं। ईसाई कहते हैं कि अब सारी दुनिया में ईसवी मज़हब फैल जाएगा। ब्रह्म समाजी कहते हैं कि सारी दुनिया में ब्रह्म समाजियों का मज़हब फैल जाएगा और आर्य समाजी कहते हैं कि हमारा मज़हब सब पर छा जाएगा। लेकिन यह सब झूठ कहते हैं। ख़ुदा तआला इन में किसी के साथ नहीं, अब दुनिया में इस्लाम का मज़हब फैलेगा और शेष सब धर्म इसके आगे तिरस्कृत और बहुत थोड़े रह जाएँगे।

**दुआ** फ़रमाया: "जो बात हमारी समझ में न आए या कोई मुश्किल सामने आए तो हमारा तरीक़ा यह है कि हम तमाम् चिन्ता छोड़कर केवल दुआ में और गिड़गिड़ाने में लग जाते हैं तब वह बात हल हो जाती है।"

## क़ुर्आन शरीफ़ पर ग़ौर करने की ज़रूरत

फ़रमाया: अफ़सोस है कि लोग तत्परता और तन्मयता के साथ क़ुर्आन शरीफ़ की ओर ध्यान नहीं देते। जितना दुनियादार अपनी दुनियादारी पर या एक शायर अपने शैरों पर ग़ौर करता है उतना भी क़ुर्आन शरीफ़ पर ग़ौर नहीं किया जाता। बटाला में एक शायर था उसका एक दीवान (काव्य) है उसने एक बार एक छंद कहा, लेकिन दूसरा छंद उसको न सूझा। दूसरे छंद की तलाश में 6 महीने तक लगातार हैरान व परेशान फिरता रहा। अन्तत: एक दिन एक बज़ाज़ की दूकान पर कपड़ा ख़रीदने गया। बज़ाज़ ने कई थान कपड़ों के निकाले, पर उसको कोई पसन्द न आया। अन्त में जब कुछ ख़रीदे बिना जाने के लिए उठ खड़ा हुआ तो बज़ाज़ नाराज़ हुआ और कहा कि तुमने इतने थान खुलवाए और अकारण तकलीफ़ में डाला। इस पर उसको शैर का दूसरा छंद सूझ गया और अपना शैर पूरा किया। जितनी मेहनत उसने एक छंद के लिए उठाई उतनी मेहनत अब लोग क़ुर्आन की एक आयत समझने के लिए नहीं उठाते। क़ुर्आन जवाहरात की थैली है और लोग इससे बेख़बर हैं। (मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

# रूहानी ख़ज़ाइन

## पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

### (हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

और हकीमुल उम्मत (हज़रत) शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी की पुस्तक है। वह फ़रमाते हैं 'मुतवफ्फीका'='मुमीतुका'। उन्होंने इस वाक्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा और मिश्कात-ए-नुबुव्वत से ग्रहण किए अर्थ का अनुकरण करते हुए न ही इसके अतिरिक्त किसी और अर्थ का वर्णन किया है। फिर (अल्लामा ज़मख़शरी की पुस्तक) क़श्शाफ़ को देख और अल्लाह से डर तथा ज़ुल्म के मार्गो को दुष्टों की भांति ग्रहण न कर।

फिर तुम इसके बाद मो'तज़िला के फ़िर्कों की आस्था जानते हो कि वे मसीह के जीवित रहने की आस्था नहीं रखते, बल्कि उन्होंने उनकी मृत्यु का इक़रार किया है और उसे अपनी आस्था में सम्मिलित किया है। इसमें कोई सन्देह नहीं की वह इस्लामी पंथों में से हैं क्योंकि तीसरी सदी के बाद उम्मत फ़िर्कों में विभाजित हो गयी थी और इस मिल्लत के गिरोहों में विभाजित होने से इन्कार नहीं किया जा सकता, और मो'तज़िला[1]✶ भी उन विभिन्न फ़िर्कों में से एक है। इमाम अबुल वहाब शो'रानी रह. जो विश्वस्त उलेमा के यहां, बहुत सर्वप्रिय हैं। वह अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अत्तबक़ात' में कहते हैं कि "मेरे बुज़ुर्ग अफ़्ज़लुद्दीन रह. फ़रमाते थे कि सूफियों का अधिकतर कलाम प्रत्यक्ष में मो'तज़िल: तथा दार्शनिकों के नियमों पर ही चलता है। अत: कोई बुद्धिमान व्यक्ति केवल इस कारण से कि यह तर्कशास्त्र उन (मो'तज़ल:) की ओर मनसूब होता है इसके इन्कार में जल्दी नहीं करेगा, बल्कि वह उनके इन तर्कों पर पूर्ण रूप से सोच-विचार करेगा। फिर वह (इमाम शो'रानी रह.) फ़रमाते है कि सय्यिदी अश्शौख़ मुहम्मद अलमग़रिबी अश्शाज़ली की पुस्तक में मैंने यह देखा है। जान लो कि क़ौम (सूफियों) का सच को सिद्ध करने का तरीक़ा विश्वास पर आधारित है और कुछ परिस्थितियों में वह मो'तज़िल: की पद्धति के निकट है। यह हमने 'लवाक़िहुल-अन्वार' से नक़ल किया है। अत: चुने हुए लोगों की तरह विचार कर और दुष्ट लोगों की तरह विमुख न हो तथा सीमा का अतिक्रमण करने वालों का मार्ग न अपना।

यदि तुम यह कहो कि चारों इमामों के विपरीत आस्थाओं पर अमल न करने पर इज्मा हो चुका है तो हम तुम्हारे लिए इस इज्मा (सर्वसम्मति) की वास्तविकता वर्णन कर चुके हैं। अत: तू दरिन्दों की भांति आक्रमणकारी न हो बल्कि मुत्तक़ियों और संयमियों की भांति सोच। और इमाम अहमद रह. जो ख़ुदा का भय रखने वाले और उसके आज्ञाकारी थे उनके इस कथन को भी स्मरण रख। उन्होंने फ़रमाया कि जो इज्मा का दावा करे वह झूठों में से है। इसके अतिरिक्त हम चारों इमामों में बहुत से आंशिक मतभेद

---

✶ **मो'तज़िला -** एक सम्प्रदाय (फ़िर्का) जो कहता है कि ख़ुदा दिखाई नहीं दे सकता, और मनुष्य जो कुछ करता है स्वयं करता है, ख़ुदा कुछ नहीं करता। (अनुवादक)

पाते हैं और उन्हें इमामों के इज्मा से बाहर पाते हैं। अत: इन मामलों तथा उनके मानने वालों के संबंध में तुम क्या कहते हो? क्या तुम इन मामलों की तबाही की शाबाशियों के इक़रारी हो या उन पर अमल करने और उन पर दृढ़तापूर्वक स्थापित हो जाने को वैध समझते हो? और उन्हें बिदअतों (धर्म में शरिअत से हटकर नई बातों का समावेश करना) के विचार नहीं मानते? और तुम जानते हो कि इज्मा इस आस्था का और इस आस्था के मानने वालों का साथ नहीं देता, बल्कि हर वह बात जो इज्मा से बाहर हो वह तुम्हारे नज़दीक खराब और बेकार माल है तथा इस आस्था के मानने वालों को तुम नास्तिक और दज्जाल समझते हो। और यदि तुम्हारा यह विचार है कि सही प्रमाण तथा स्पष्ट वर्णन से ईसा अलमसीह के जीवित रहने पर इज्मा हो चुका है तो यह तुम्हारा और तुम्हारे जैसों का बनाया हुआ झूठ है। स्मरण रखो कि झूठ गढ़ने वालों पर ख़ुदा की लानत है। हे जल्दी करने वालो क्यों झुठलाते फिरते हो। और सबसे बड़ी तबाही उन लोगों को झुठलाना है जिन पर सच और विश्वास के मार्गों की बारीकियों में से वे प्रकटन हुए जो उनके अतिरिक्त दूसरों पर नहीं हुए थे। कितने ही लोग हैं जिन्हें केवल उनकी कुधारणाओं ने ही तबाह किया (मारा) और सच्चों को गालियां देने ने तबाह किया। इन्होंने वलियों के यहां गुस्ताखी (घृष्टता) से प्रवेश किया, हालांकि उन्हें वहां डरते हुए प्रवेश करना चाहिए था।

इन्कार करने वालों ने हर तीर चलाया और हर भ्रम का अनुकरण किया, परन्तु वह इस मैदान में ठहर न सके तथा उन्होंने अत्यधिक प्रयास किया, परन्तु बकवास के अतिरिक्त उनके पास कुछ न रहा। अत: जब (उनके) निषंग (तरकश) ख़ाली हो गए और खज़ाने समाप्त हो गए तथा उनके लिए भागने और शरण लेने का कोई स्थान शेष न रहा और उनके न दांत रहे न कुचलियां। तो उन्होंने गाली-गलौज, काफ़िर कहना और छल-कपट की ओर मुख किया, इस आशा से कि वे इस उपाय से विजयी हो जाएंगे। फिर उनमें से एक व्यक्ति ने भ्रम डालने वाले शैतान के भ्रमों के प्रभाव के अन्तर्गत क़लम चला कर जन साधारण को धोखा देने का साहस किया तथा इस उद्देश्य से एक पुस्तक लिखी। किन्तु ख़ुदा का प्रारब्ध कि इनाम की शर्त पर जो उसने पुस्तक प्रकाशित की वही उसके दोषों के प्रकट होने का कारण बनी। उसने दावा किया कि उसने हमें खामोश और गूंगा कर दिया है और निरुत्तर करने के समस्त सोपान तय कर लिए हैं और वह विजयी लोगों में से हो गया है। इस पर हम उठ खड़े हुए ताकि हम उसके दावे की वास्तविकता और उस के घाट के पानी को परखें और महा झूठे तथा उसके उपद्रव को टुकड़े-टुकड़े कर दें और उसकी सेना को वह कुछ दिखा दें जिस से वे लापरवाह थे।

उस व्यक्ति के इस इनाम ने जानवरों वाली विशेषता रखने वाले लोगों को वहशी (उजड्ड) बना दिया और उसकी घोषणा ने लगड़-बगड़ विशेषता रखने वाले लोगों को आश्चर्य के भंवर में डाल दिया तथा वे उसकी बातों की कमीनगी और उसके प्रहार की कमज़ोरी को न जान सके। और उन्होंने उसकी मृग-तृष्णा को बहता हुआ मधुर झरना समझा।... (शेष.....)

पुस्तक: (इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 19-24)

★ ★ ★

## सम्पादकीय

## मुस्लिम उम्मत की ख़िलाफ़त से महरूमी तथा ख़िलाफ़त की स्थापना के लिए मुस्लिम दुनिया की पुकार

प्रिय पाठको ! जैसा कि आप सभी जानते हैं मई के महीने में 27 तारीख को जमात अहमदिया ख़िलाफ़त दिवस के रूप में मनाती है। ज्ञात रहे कि 26 मई को जमात अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का देहांत हुआ था और उसके अगले दिन ख़िलाफ़त की स्थापना हुई। निज़ाम ख़िलाफ़त खुदा का इनाम है और एक उपकार है जिसके माध्यम से आज जमात अहमदिया एक आवाज़ पर उठती और बैठती है। हर क़दम पर हर मोड पर ख़िलाफ़त हमारी रहनु माईकरती रही है और आज भी कर रही है।

ख़िलाफ़त अल्लाह तआला उन्हीं क़ौमों को प्रदान करता है जो उचित रंग में नेक कर्म करते हैं जैसा कि पवित्र क़ुरआन में है:

وَعَدَ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسۡتَخۡلِفَنَّہُمۡ فِی الۡاَرۡضِ ... فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ (नूर आयत- 56)

**अनुवाद**- तुम में से जो लोग ईमान लाए और पुण्य कर्म किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें अवश्य धरती में ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उस ने उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया और उनके लिए उनके धर्म को, जो उस ने उनके लिए पसन्द किया अवश्य दृढ़ता प्रदान करेगा और उनकी भयपूर्ण अवस्था के बाद अवश्य उन्हें शान्तिपूर्ण अवस्था में बदल देगा। वे मेरी उपासना करेगें। मेरे साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराएँगें और जो उसके बाद भी कृतघ्नता करे तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं।

पवित्र क़ुर्आन की इस आयत में ख़ुदा तआला ने मुसलमानों से वादा फ़रमाया है कि यदि तुम नेक कर्म करते रहे, तक़्वा की राहों पर चलते रहे तो जिस प्रकार पहली क़ौमों को ख़िलाफ़त की नेअमत प्रदान की गई थी उसी तरह तुम्हें भी ख़िलाफ़त की नेअमत प्रदान की जाएगी।

यहां इसका हरगिज़ यह अभिप्राय नहीं कि तुम धरती में ख़िलाफ़त के लिए मांग शुरू कर दो। इसके लिए जलसे, बड़ी बड़ी मज्लिसें और सेमिनार आयोजित करो,जलूस निकालो और लोगों को बताओ कि हमने ख़िलाफ़त की प्रणाली स्थापित करनी है तो तब हम तुम्हें ख़िलाफ़त की नेअमत प्रदान करेंगे, क्योंकि ख़िलाफ़त कोई सांसारिक पद नहीं है। यह तो केवल और केवल अल्लाह तआला की प्रदान की गई नेअमत है। इतिहास गवाह है कि आज तक कभी कोई ऐसी घटना नहीं हुई कि किसी व्यक्ति या क़ौम ने ख़िलाफ़त की मांग या इच्छा प्रकट की इसके लिए जलसे किए हों तो उन को ख़िलाफ़त मिली हो क्योंकि ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है और इस में मानवीय हाथ बिल्कुल नहीं होता।

इस्लाम का इतिहास इस बात पर गवाह है कि अल्लाह तआला स्वयं ख़लीफ़ा चुनता है और इसके नतीजा में धर्म उन्नति के मार्ग पर चलने लगता है।

इस्लाम के आरम्भिक इतिहास में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ख़िलाफ़त राशिदा की दौलत प्रदान

की। चाहिए तो यह था कि मुसलमान उसका सम्मान करते और उस नेअमत की सुरक्षा के लिए नेक कर्म करते परन्तु बदक़िस्मती से मुसलमानों में ख़िलाफ़त राशिदा का सुनहरी युग केवल 30 साल तक स्थापित रहा और इसके बाद अत्याचारी हुक्मरानों और जाबिर सुल्तानों का युग जारी हुआ और उम्मत मुस्लिमा एक के बाद दूसरी निराशा और पतन की ओर गिरती रही। इस पतन और निराशा का एक ही इलाज था जो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वर्णन फ़रमाया था अर्थात इमाम महदी अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भाव और आपके बाद ख़िलाफ़त का पथ।

सम्माननीय पाठको! एक ओर तो ख़ुदा तआला की तक़दीर यह घोषणा कर रही है कि ख़िलाफ़त की स्थापना ख़ुदा तआला का काम है जबकि दूसरी ओर उम्मत मुस्लिमा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए इलाज से मुंह मोड़ कर बल्कि विरोध करके स्वयं ही ख़िलाफ़त स्थापित करना चाहती है हालाँकि वास्तविकता यह है कि इमाम महदी अलैहिस्सलाम के इन्कार और ख़िलाफ़त की नेअमत से वंचित होने के कारण ही मुसलमान धड़ाधड़ फ़िर्क़ों में बटे हैं और प्रत्येक फ़िर्क़ा दूसरे फ़िर्क़े को आलोचना का निशाना बना रहा है। एक मुसलमान दूसरे मुसलमान भाई के ख़ून का प्यासा है। एक दूसरे की इज़्ज़त का किसी को भी ध्यान नहीं। यहां तक कि कुछ फ़िर्क़े एक साथ बैठ कर खाना भी पसन्द नहीं करते और इस्लाम के शत्रु प्रत्येक क्षण मुसलमानों को हानि पहुंचाने और मुस्लिम देशों को नष्ट करने के लिए कोशिश कर रहे हैं परन्तु इसके बावजूद मुसलमान इस्लाम दुश्मनों के इन इरादों को जानकर उनसे बचने और मुक़ाबला करने के स्थान पर स्वयं इन इस्लाम दुश्मन शक्तियों का साधन बन रहे हैं और उनके साथ मिलकर दूसरे मुसलमान भाइयों की तबाही के मंसूबे बना रहे हैं।

मुसलमानों में से जो समझदार हैं वे जानते हैं कि इन मुसीबतों का इलाज क्या है। वे ख़ुदाई आदेश की अवज्ञा करके अपने आप ख़िलाफ़त स्थापित करना चाहते हैं और कई ऐसे हैं जो ख़िलाफ़त से वंचित होने का शोर मचा रहे हैं। ख़िलाफ़त की स्थापना के लिए मुस्लिम दुनिया की पुकार आप आए दिन सुनते और पढ़ते हैं जिससे पता चलता है कि ख़िलाफ़त से वंचित रहने की उम्मत के बड़े लोगों को कितनी व्याकुलता है और कितना दुख है और किस तरह विभिन्न फिर्कों के इस्लामी उलमा उम्मत को ख़िलाफ़त के मुबारक निज़ाम से जोड़ने के लिए तहरीक और नसीहत कर रहे हैं।

लेकिन वह नहीं जानते कि ख़िलाफ़त का निज़ाम स्वयं नहीं बनाया जा सकता। यह खुदा ही बनाता है और उसी का बनाया हुआ ख़लीफा उम्मत की सही रहनुमाई कर सकता है। अल्लाह के फ़ज़ल से जमात अहमदिया में ख़िलाफ़त का यह निज़ाम 100 साल से जारी है और हम अहमदी बहुत खुशनसीब हैं कि क़ुरआन मजीद और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई (भविष्यवाणी) के अनुसार जो ख़िलाफ़त दुनिया में चल रही है हम उसकी पैरवी करते हैं और जानो दिल से उस पर कुर्बान हैं। एक हदीस में लिखा है कि जिसकी मौत इस हाल में हुई कि उसने समय के इमाम को नहीं पहचाना तो उसकी मौत जहालत की मौत है। इस हदीस की रोशनी में उम्मत को अपनी फिक्र करनी चाहिए कि कहीं ऐसा तो नहीं कि खुदा की तरफ से कोई आया हो और वह उसको पहचान नहीं पा रहे??

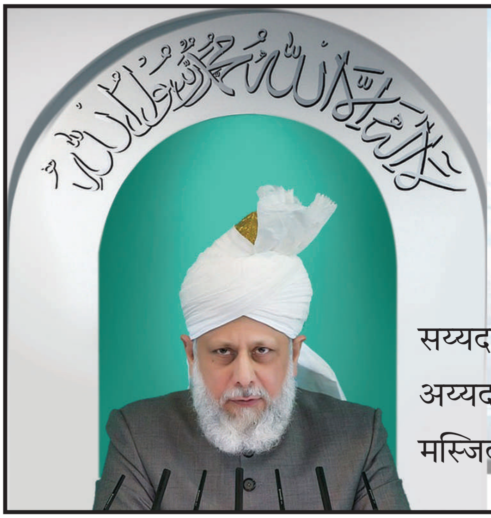

# सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 5.4.2024 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

## क़ुर्आने करीम तथा हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की कुछ दुआएँ।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले जुम्अः को मैंने दुआ का विषय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवालों की रोशनी में बयान किया था, यही आज भी जारी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं व्याकुल की दुआएँ सुनता हूँ, तो व्याकुल से अभिप्रायः केवल पीड़ित ही नहीं बल्कि ऐसा व्यक्ति है जिसके सब रास्ते कट गए हों। अतएव जब हम दुआ के लिए अल्लाह तआला के आगे झुकें तो ऐसी अवस्था बनाकर झुकें तथा अल्लाह तआला के समक्ष यह दुआ करें कि तेरे अतिरिक्त हमारा कोई नहीं तथा हम तेरे ही आधीन हैं तथा तुझ पर ही भरोसा करते हैं।

हर अहमदी को यह बात अपने मस्तिष्क में अच्छी तरह बिठा लेनी चाहिए कि व्याकुलता की अवस्था पैदा करें, यदि अपनी दुआओं को क़ु बूल करवाना चाहते हैं। इस समय मैं कुछ क़ुर्आन से तथा सुन्नत से एवं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं को भी दोहराऊँगा। इन पर निरन्तर ध्यान देना चाहिए। सबसे पहले तो सूरः फ़ातिहः है, नमाज़ के अतिरिक्त भी इसे दोहराते रहना चाहिए, इसको अत्यंत ध्यान पूर्वक समझ कर पढऩे तथा विर्द (जाप) करने से इंसान अल्लाह तआला के निकट होता है।

फिर क़ुर्आन करीम की एक दुआ है-

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(अल-बक़रा-२०२)

फिर इस दुआ को भी आजकल अति व्याकुलता के साथ करना चाहिए।

رَبَّنَآ اَفۡرِغۡ عَلَیۡنَا صَبۡرًا وَّثَبِّتۡ اَقۡدَامَنَا وَانۡصُرۡنَا عَلَی الۡقَوۡمِ الۡکٰفِرِیۡنَ

फिर इस दुआ का भी बार बार विर्द करना चाहिए।

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذۡنَاۤ اِنۡ نَّسِیۡنَاۤ اَوۡ اَخۡطَاۡنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحۡمِلۡ عَلَیۡنَاۤ اِصۡرًا کَمَا حَمَلۡتَہٗ عَلَی الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلۡنَا مَا لَا طَاقَۃَ لَنَا بِہٖ ۚ وَاعۡفُ عَنَّا ٝ وَاغۡفِرۡ لَنَا ٝ وَارۡحَمۡنَا ٝ اَنۡتَ مَوۡلٰنَا فَانۡصُرۡنَا عَلَی الۡقَوۡمِ الۡکٰفِرِیۡنَ

(अल-बक़रा-२८७)

फिर ईमान की मज़बूती के लिए यह दुआ बहुत पढनी चाहिए।

رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوۡبَنَا بَعۡدَ اِذۡ ہَدَیۡتَنَا وَہَبۡ لَنَا مِنۡ لَّدُنۡکَ رَحۡمَۃً ۚ اِنَّکَ اَنۡتَ الۡوَہَّابُ

अनुवाद- हे हमारे रब! हमारे दलों को टेढ़ा ना होने दे बाद इसके कि तू हमें हिदायत दे चुका हो। और हमें अपनी तरफ़ से रहमत अता कर। यक़ीनन तू ही है जो बहुत अता करने वाला है।

(आले इमरान-९)

हुज़ूरे अनवर ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बताई हुई कुछ दुआओं का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को नमाज़ में मांगने वाली ये दुआ सिखाई-

اَللّٰھُمَّ إِنِّی ظَلَمْتُ نَفْسِی ظُلْمًا کَثِیْرًاوَ لَمْ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ، فَاغْفِرْلِی مَغْفِرَۃً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِی إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ

अनुवाद- हे अल्लाह! मैंने अपनी जान पर अत्यधिक ज़ुल्म किया, तथा तेरे अतिरिक्त कोई गुनाहों को माफ नहीं कर सकता। अत: तू अपनी कृपा से मेरी मगफिरत फ़रमा तथा मुझ पर दया कर। नि:सन्देह तू ही क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब किसी समस्या के कारण कोई कठिनाई होती तो आप स. फ़रमाते हैं कि-

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ

(مشکوٰۃ المصابیح کتاب الدعوات)

अनुवाद- हे जीवित तथा दूसरों को जीवित रखने वाले! हे क़ायम तथा दूसरों को क़ायम रखने वाले! अपनी रहमत के साथ मेरी मदद फ़रमा।

अतएव ये दुआएँ ही हैं जो हमारे निजी जीवन में भी तबदीली लाएँगी। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ये दुआएँ हैं इनका अनुवाद याद करके अथवा इनके अभिप्राय को समझ कर, इस तरह हमें भी दुआएँ करनी चाहिएँ।

फिर बुख़ारी में एक दुआ इस तरह मिलती है कि-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا، وَ بَصَرِيْ نُوْرًا ، وَ فِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا ،وَعَنْ يَمِيْنِيْ نُوْرًا ، وَعَنْ يَسَارِيْ نُوْرًا ، وَفَوْقِيْ نُوْرًا ، وَ تَحْتِيْ نُوْرًا ، وَ اَمَامِيْ نُوْرًا ، وَ خَلْفِيْ نُوْرًا، وَجْعَلْ لِيْ نُوْرًا

अनुवाद- हे अल्लाह! मेरे दिल में नूर रख दे, मेरी दृष्टि तथा समझबूझ में नूर रख दे, मेरी समाअत (सुनने की शक्ति) में नूर रख दे, मेरे दाएँ भी नूर रख दे, मेरे बाएँ भी नूर रख दे, मेरे ऊपर भी नूर हो और मेरे नीचे भी नूर हो तथा मेरे आगे भी नूर रख दे तथा मेरे पीछे भी नूर रख दे तथा मेरे लिए नूर ही नूर कर दे।

फिर आप स. की एक दुआ का यूँ वर्णन है-

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الْاَخْلَاقِ وَالْاَعْمَالِ وَالْاَهْوَاءِ

(तिर्मज़ी)

ऐ मेरे अल्लाह! मैं बुरे नैतिक आचरण तथा बुरे कर्मों से एवं बुरी इच्छाओं से तेरी शरण चाहता हूँ। यह अति संक्षिप्त सी दुआ है, यदि इंसान इसको व्याकुल होकर करे तो अनेक बुराईयाँ भी दूर हो जाएँगी तथा नेकियाँ पैदा हो जाएँगी।

फिर दुश्मनों के बुरे इरादों के विरुद्ध दुआ है-

اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ ، وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ

(अबू दाऊद)

हे अल्लाह! हम तुझे उनके उपद्रवों के मुक़ाबले पर रखते हैं तथा उनके उपद्रव से तेरी शरण में आते हैं। यह दुआ भी आजकल अहमदियों को अत्यधिक पढ़नी चाहिए, दुश्मनों की चालों से अल्लाह तआला हमें सुरक्षित रखे।

हुज़ूरे अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ दुआएँ बयान करते हुए फ़रमाया कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मौलवी नज़ीर हुसैन साहब सखा देहलवी के पत्र के उत्तर में उन्हें नमाज़ में लीनता प्राप्त करने का मार्ग लिखते हुए फ़रमाया- अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह, तरीक़ा यही है कि नमाज़ में अपने लिए दुआ करते रहें तथा केवल ऊपरी एवं अरूचि कर नमाज़ से संतुष्ट न हों बल्कि जहाँ तक सम्भव हो, ध्यान पूर्वक नमाज़ अदा करें। ध्यान पैदा न हो तो पाँचों समय ख़ुदा तआला के समक्ष नमाज़ में हर एक रकअत के बाद खड़े होकर यह दुआ करें- ऐ ख़ुदा तआला, क़ादिर व ज़ुलजलाल! मैं पापी हूँ तथा अत्यधिक पाप के विष ने मेरे दिल तथा रोम रोम को दूषित किया है कि मुझे विनयता एवं लीनता नमाज़ में नहीं मिल रही, तू अपनी कृपा एवं दया से मेरे पापों को क्षमा कर दे तथा मेरी मूर्खताओं को माफ कर दे तथा मेरे हृदय को कोमल कर दे और मेरे दिल में अपनी महानता एवं अपनी नाराज़गी का भय एवं अपनी मुहब्बत बिठा दे ताकि उसके द्वारा मेरे दिल की कठोरता दूर होकर नमाज़ में लीनता प्राप्त हो जावे।

दुआ की क़बूलियत के लिए यह भी अति आवश्यक है कि हम अधिक से अधिक दरूद शरीफ पढ़ें।

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक़ भी दे कि हम अपने दिल से यह दुआएँ करने वाले हों। अपनी भाषा में भी दुआएँ करें तथा उस वास्तविक व्याकुलता एवं दर्द के साथ दुआएँ करें कि दिल की गहराइयों से ये दुआएँ निकल रही हों। रमज़ान की बरकतों को सदैव क़ायम रहने के लिए भी दुआ करें।

हमें तथा हमारी पीढ़ियों को युद्ध की आग से सुरक्षित रहने तथा उसके बाद के दुष्प्रभावों से सुरक्षित रहने के लिए बहुत दुआएँ करें। अब लगता है कि यह जंग सामने खड़ी है बल्कि विश्व युद्ध शुरु हो चुका है परन्तु दुनिया के शासकों को इसकी कोई चिंता नहीं। ऐसे में अहमदियों को अपने आपको ख़ुदा के निकट करने तथा दुआओं में व्याकुलता पैदा करने की अति आवश्यकता है ताकि उनके उपद्रव बच सकें। अल्लाह तआला मानवता को बचा ले तथा हमें दुआओं में भी अपना हक़ अदा करने का सामर्थ्य प्रदान करे, आमीन।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

# हुज़ूर-ए-अनवर के दुआआँ की कुबूलियत के ईमान वर्धक वृत्तान्त और दुआओं के विषय में हुज़ूर अनवर के निर्देश तथा उपदेश

अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक एम ए

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱسْتَجِيبُواْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْۖ وَٱعْلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ ٱلْمَرْءِ وَقَلْبِهِۦ وَأَنَّهُۥٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ۔

(सूरत इन्फ़ाल, आयत 25)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह और रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहा करो जब वह तुम्हें बुलाए, ताकि वह तुम्हें ज़िंदा करे और जान लो कि अल्लाह इन्सान और इस के दिल के मध्य प्रकट होता है और यह भी जान लो कि तुम उसी की तरफ़ इकट्ठे किए जाओगे।

सम्माननीय सभाध्यक्ष तथा श्रोतागण! विनीत के भाषण का विषय है:- ''हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दुआ की स्वीकार्यता के ईमान वर्धक वृतांत और दुआओं के विषय में हुज़ूर अनवर के निर्देश तथा उपदेश।

कुरआन मजीद की जो आयत विनीत ने तिलावत की है इस में अल्लाह तआला ने अपने रसूल के अवतरण का उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से मुर्दा लोगों को ज़िंदा करना बताया है। अल्लाह तआला की ओर से अवतरित रसूल जिन माध्यमों से अपने मानने वालों को आध्यात्मिक रूप से ज़िंदा करता है उन में से एक महत्वपूर्ण माध्यम वे दुआएं हैं जो वह अपने मानने वालों के लिए करता है और अल्लाह तआला उन को स्वीकार कर लोगों के आध्यात्मिक जीवन के साधन करता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ما كانت النبوة قط الا تبعتها خلافة (कंज़ुल उम्माल खंड 1) कि जब भी कोई नबी दुनिया में अवतरित होता है उस के बाद उस के काम को जारी रखने के लिए ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी होता है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद भी अल्लाह तआला के वादों और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार ख़िलाफ़त का निज़ाम जमाअत अहमदिया में स्थापित है और ख़िलाफ़त के आज्ञाकार लोग इन समस्त बरकतों से लाभान्वित हो रहे हैं जो ख़िलाफ़त से अल्लाह तआला ने जोड़ कर रखी हैं और आध्यात्मिक रूप से उन ज़िंदा लोगों में शामिल हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद अब ख़िलाफ़त के माध्यम से जीवित हो रहे हैं। दुआ की स्वीकार्यता के माध्यम जिस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मानने वालों को आध्यात्मिक रूप से ज़िंदा करते रहे इसी तरह आप अलैहिस्सलाम के बाद आपके

उत्तराधिकारी (प्रत्येक ख़लीफ़-ए-वक़्त) भी ज़िंदा करते रहे और अब भी यह सिलसिला ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा में अपनी पूरी शान के साथ जारी है।

पूर्व इसके कि मैं हज़रत अमीरुल मोमिनीन खलीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआ की स्वीकार्यता के कुछ वृतांत आपकी सेवा में प्रस्तुत करूँ। दुआ के लाभ, महत्व और इस की बरकतों के सबंध से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूँगा। क्योंकि इस ज़माने में आप ही वह वाहिद वजूद हैं जिन्हों ने दुआ के विषय से हर लेख को न सिर्फ विस्तार के साथ वर्णन किया है बल्कि हर अहमदी के दिल में इस विषय को इस तरह से दिलों में बैठा दिया है कि अब हर अहमदी की ज़िंदगी सिर्फ़ दुआ है और यही वह ग़िज़ा है जिससे वह अपनी आध्यात्मिक जीवन के साधन करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं :

"दुआ एक ज़बरदस्त ताक़त है जिससे बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ हल हो जाती हैं और कष्टदायक मार्गों को इन्सान बड़ी आसानी से तय कर लेता है। क्योंकि दुआ उस फ़ैज़ और क़ुव्वत को सोखने वाली नाली है जो अल्लाह तआला से आता है। जो व्यक्ति अधिकता से दुआओं में लगा रहता है वह आख़िर इस फ़ैज़ को खींच लेता है और ख़ुदा तआला से सहायता पाकर अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर लेता है....निश्चित समझो कि दुआ बड़ी दौलत है। जो व्यक्ति दुआ को नहीं छोड़ता उस के दीन और दुनिया पर आफ़त न आएगी। वह एक ऐसे क़िले में सुरक्षित है जिसके आस-पास हथियारबंद सिपाही हर वक़्त सुरक्षा करते हैं। लेकिन जो दुआओं से लापरवाह है वह उस व्यक्ति के समान है जो ख़ुद बे हथियार है और इस पर कमज़ोर भी है और फिर ऐसे जंगल में है जो काट खाने वाले जानवरों से भरा हुआ है। वह समझ सकता है कि इस की भलाई कदापि नहीं है। एक पल में वह काट खाने वाले जानवरों का शिकार हो जाएगा और इस की हड्डी बोटी नज़र न आएगी। इस लिए याद रखो कि इन्सान का बड़ा सौभाग्य और इस की सुरक्षा का वास्तविक माध्यम ही यही दुआ है। यही दुआ उस के लिए पनाह है अगर वह हर वक़्त इस में लगा रहे"।

(मलफ़ूज़ात नंबर 7 सफ़ा 193-192 प्रिंट लंदन ऐडीशन 1984)

दुआ की स्वीकार्यता की अवस्था वर्णित करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

दुआ की वास्तविकता यह है कि एक नेक बन्दे और उसके रब्ब में एक आकर्षित करने वाला संबंध है अर्थात् पहले ख़ुदा तआला की रहमानियत अर्थात् अपार दया शक्ति को अपनी ओर खींचती है। फिर बन्दे के सिद्क़ (सत्यता) के आकर्षण से ख़ुदा तआला उससे नज़दीक हो जाता है और दुआ की हालत में वह संबंध एक विशेष स्थान पर पहुंच कर अपनी अद्भुत विशेषताएं पैदा करता है। अत: जिस समय बन्दा किसी बड़ी मुश्किल में पड़ कर ख़ुदा तआला की ओर पूर्ण विश्वास और पूरी आशा और पूरी मुहब्बत और पूरी वफ़ादारी तथा पूरे साहस के साथ झुकता है और पूरी तरह सतर्क होकर भूल-चूक के पर्दों को चीरता हुआ

फ़ना (अपने अस्तित्व को मिटा देना) के मैदान में आगे से आगे निकल जाता है, फिर आगे क्या देखता है कि अल्लाह का दरबार है और उसके साथ कोई शरीक नहीं तब उसकी रूह उस चौखट पर सर रख देती है और आकर्षण  शक्ति जो उसके अन्दर रखी गई है वह ख़ुदा तआला की कृपा को अपनी ओर खींचती है। तब अल्लाह तआला जिसकी आभा प्रतिष्ठित है और उस कार्य को पूरा करने की ओर ध्यानाकर्षित होती है और उस दुआ का प्रभाव उन सभी बुनियादी कारणों पर डालता है जिन से ऐसे सामान उत्पन्न होते हैं जो उस मतलब की प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं। उदाहरणतया यदि वर्षा के लिए दुआ है तो दुआ की क़ुबूलियत के पश्चात् वह प्राकृतिक कारण जो वर्षा के लिए अनिवार्य होते हैं उस दुआ के प्रभाव से पैदा किये जाते हैं। अत: यदि अकाल के लिए बद्दुआ है तो सर्वशक्तिमान उलट कारणों को पैदा कर देता है। इसी कारण से यह बात अह्ले कश्फ़ और कमाल रखने वाले महात्माओं के नज़दीक बड़े-बड़े तजुर्बों  से साबित हो चुकी है कि कामिल (महापुरुष) की दुआ में उत्पत्ति की शक्ति पैदा हो जाती है। अर्थात् अल्लाह तआला के आदेश पर वह दुआ धरती व आकाश में परिवर्तन करती है और पंचभूत तथा सौर मंडल और मनुष्यों के दिलों को उस ओर ले आती है। जिन का समर्थन करना उद्देश्य है।

(बरकातुद्दुआ रुहानी ख़ज़ाइन जल्द 6 सफ़ा 10-9)

पाठकगण! अब विनीत हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दुआ की स्वीकार्यता के बेशुमार वाक़ियात में से सिर्फ़ कुछ एक वाक़ियात प्रस्तुत करेगा।

1- ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया ऐसी नेअमत है जो जहां प्यासी रूहों को तृप्त करती है वहां बंजर ज़मीनों की सिंचाई के साधन भी करती है। जलसा सालाना 2012ई० की दूसरे दिन की तक़रीर के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने महाद्वीप अफ़्रीक़ा में ज़ाहिर होने वाले सैंकड़ों निशानों में से एक निशान का ज़िक्र इस तरह फ़रमाया :-

"अमीर साहिब माली लिखते हैं कि पिछले साल बहुत कम बारिश हुई जिसकी वजह से अत्यंत कठिनाई थी। उन्होंने मुझे भी दुआ के लिए लिखा तो मैंने उनको कहा था कि नमाज़-ए-इस्तिस्क़ा पढ़ें। अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया। हमारे एक मुअल्लिम बयान करते हैं कि एक स्कूल टीचर मुहम्मद तोरे साहिब उनके पास आए और बताया कि वह बाक़ायदगी से रेडियो अहमदिया सुनते थे लेकिन जमाअत से कोई संबंध नहीं था। एक दिन सुना कि जमाअत के ख़लीफ़ा ने इस इलाक़े के लिए बारिश की ख़ुसूसी दुआ की है। फिर उसने सुना कि माली जमाअत का अमीर उनके इलाक़े में आ रहा है तो दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि वह ख़ुद जा कर उसे मिले। अत: फ़राको (farako) गांव जहां प्रोग्राम था वह वहां पहुंच गया। वहां भी उसने अमीर से सुना कि इस इलाक़े में बारिशों के लिए ख़लीफ़तुल मसीह ने दुआ की है और फिर ख़ुसूसी नमाज़ पढ़ाई। उसने अपने दिल में रख लिया कि अगर इस साल असामान्य बारिश होती है तो सिर्फ़ दुआ

का नतीजा होगा। क्योंकि कई साल से अच्छी बारिशें नहीं हुई थीं। जब बारिश का मौसम आया तो उसने देखा कि हर दूसरे तीसरे दिन बहुत बारिश हो जाती है। वह इस चीज़ का गवाह है कि गुज़श्ता दस सालों से ऐसी बारिशें नहीं हुईं। आज वह इसलिए आया है कि अहमदियत में दाख़िल हो क्योंकि ख़ुदा ख़लीफ़ा के साथ है। अलहमदुलिल्लाह। अब इस गांव में अधिकता से लोग बैअत कर रहे हैं।''

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 3 अगस्त 2018 सफ़ा 18)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस वर्ष रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ की तरफ़ से आयोजित God summit के मौक़ा पर अपने विशेष संदेश में कुछ वाक़ियात का वर्णन किया। उनमें से कुछ एक का वर्णन करता हूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया आईवोरी कोस्ट का एक वाक़िया हमारे मुअल्लिम ने लिखा। एक निष्कपट अहमदी हैं वहां अबदुल्लाह साहिब उनके बारे में लिखा कि मेरे भाई को इस तरह पुलिस पकड़ कर ले गई है और अदालत ने उस को नशा बेचने के जुर्म में बीस साल क़ैद की सज़ा सुना दी। कहते हैं मैं बड़ा परेशान था कि मेरे भाई को इस तरह पुलिस पकड़ के ले गई है। वह कोई मुजरिम नहीं है। कहते हैं इस परेशानी की हालत में उन्होंने मुझे यहां लंदन में ख़त लिखा। कहते हैं ख़लीफ़तुल मसीह को मैंने ख़त लिखा दुआ के लिए और ख़ुद भी अपने भाई की रिहाई के लिए दुआ शुरू कर दी।

कहते हैं लेकिन इस के बावजूद रिहाई की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। तो कहते हैं एक दिन ख़ाब में मैंने देखा, वह मुझे लिख रहे हैं कि ख़लीफ़तुल मसीह को देखा, आपको देखा और आपने फ़रमाया कि परेशान न हो और सब्र करो तुम्हारा भाई जल्दी रिहा हो जाएगा। सुबह जब मैं उठा तो मुझे बड़ी तसल्ली थी और यक़ीन था कि इंशा अल्लाह तआला, अल्लाह कोई चमत्कार दिखाएगा और मेरा भाई रिहा हो के आ जाएगा लेकिन भाई ने क्या रिहा होना था उल्टा कुछ दिन के बाद उनकी वालिदा की तबीयत ख़राब हो गई। उनको शहर के बड़े अस्पताल में ले जाना पड़ा और वहां उन्होंने दाख़िल कर लिया। कहते हैं मैं बड़ा परेशान कि पहले एक मुसीबत थी अब दूसरी मुश्किल भी आ गई। वालिदा बीमार हो गई हैं, बड़ी बेचैनी की हालत थी, बड़ी बेबसी की हालत थी, बहुत परेशान था कि समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। फिर मैं ने दुआ की तो कहते हैं रात को सोया तो फिर उन्होंने मुझे ख़ाब में देखा और मैंने उनको कहा कि उठो और जा के दरवाज़ा खोलो। कहते हैं मैं बेदार हो गया। एक दम मैं जागा, आँख खुली मेरी तो देखा दरवाज़े कोई knock कर रहा था। जा के मैंने दरवाज़ा खोला तो कहते हैं वहां मेरा बड़ा भाई मौजूद था। उसने कहा कि पुलिस ने मुझे आज रिहा कर दिया है और कहते हैं ये सब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दुआओं की बरकत का चमत्कार है और ख़लीफ़ा वक़्त से ताल्लुक़ का चमत्कार है। अल्लाह तआला हमें हमेशा खिलाफ़त के साथ चिमटाए रखे। आमीन

☆ ☆ ☆

# मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की
## मृत्यु और जीवन की आस्था का महत्व
### (लेखक- हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए रज़िअल्लाहु अन्हो)

*अर्थात् "ख़ुदा (प्रलय के दिन) कहेगा कि हे ईसा मरयम के बेटे क्या तूने लोगों से कहा था कि तुम मुझे और मेरी मां को अल्लाह के अतिरिक्त दो ख़ुदा मान लो। तो इस पर हज़रत ईसा उत्तर देंगे - पवित्र है तेरी हस्ती मेरे लिए उचित नहीं कि वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई अधिकार नहीं। यदि मैंने ऐसी कोई बात कही है तो तू उसे जानता है। तू जानता है जो मेरे मन में है परन्तु मैं नहीं जानता जो तेरे मन में है, तू निःसन्देह सब ग़ैबों (परोक्ष) का जानने वाला है। मैंने उन्हें इस बात के अतिरिक्त जिसका तूने मुझे आदेश दिया और कुछ नहीं कहा और वह यह कि अल्लाह की उपासना करो जो मेरा और तुम्हारा दोनों का प्रतिपालक है तथा मैं उनका संरक्षक रहा जब तक कि मैं उनके मध्य रहा परन्तु जब हे ख़ुदा तूने मुझे मृत्यु दे दी तो तू ही उन्हें देखने वाला था और तू प्रत्येक वस्तु पर संरक्षक है।"*

यह आयत मसीह की मृत्यु पर सबूत का एक सूर्य उदय कर देती है। के शब्दों में मसीह अलैहिस्सलाम केवल दो युगों की चर्चा करता है जिनमें से वह एक के बाद दूसरे से गुज़रा। प्रथम युग वह है जब मसीह अपने अनुयायियों के मध्य मौजूद था और दूसरा युग जो पहले के साथ संलग्न और जुड़ा हुआ है वह मसीह की मृत्यु का युग है। अब यदि मसीह वास्तव में आकाश पर गया होता तो उसका उत्तर यह होना चाहिए था कि

مَادُمتُ فِیہِم فَلَمَّا رَفعتَنِی اِلَی السَّمَاءِ حیًّا

अर्थात् "मैं अपने अनुयायियों पर संरक्षक रहा जब तक मैं उन में रहा फिर जब तूने मुझे जीवित आकाश पर उठा लिया।" अन्त तक

परन्तु मसीह का उत्तर यह नहीं अपितु मसीह ने अपने अनुयायियों के मध्य रहने वाले युग के पश्चात् दूसरा युग जिसका वर्णन किया है वह केवल अपनी मृत्यु का युग है। अतः सिद्ध हुआ कि मसीह अलैहिस्सलाम आकाश पर नहीं उठाया गया अपितु जिस प्रकार अन्य मनुष्य मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं उसी प्रकार वह भी मृत्यु को प्राप्त हो गया। बहस के अन्तर्गत आयत हमें स्पष्ट शब्दों में बताती है कि वह वस्तु जो मसीह के पहले युग अर्थात् अनुयायियों के मध्य रहने वाले युग को समाप्त करने वाली तथा एक नया दौर आरम्भ करने वाली है वह मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु है, जैसा कि के शब्दों से स्पष्ट है। यदि पहले युग को समाप्त करने वाली वस्तु आकाश पर जाना होता तो मसीह का यह उत्तर सरासर ग़लत ठहरता है।

फिर यही नहीं अपितु इस आयत में हज़रत मसीह अपनी मृत्यु का समय भी हमें बताते हैं, क्योंकि फ़रमाते हैं कि "मैंने अपनी जाति को यही शिक्षा दी थी कि ख़ुदा की उपासना करो जो मेरा, तुम्हारा और

सब का प्रतिपालक है और मैं जब तक उन के बीच रहा उन का संरक्षक रहा।" जिसके अर्थ ये हैं कि जब तक मैं उनमें रहा मैंने उन्हें सदमार्ग से भटकने नहीं दिया। इस प्रकार जैसे मसीह अपने अनुयायियों के पथभ्रष्ट हो जाने के बारे में अपनी अज्ञानता प्रकट करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि मसीही लोग हज़रत मसीह की मृत्यु के पश्चात् पथ भ्रष्ट हुए थे, परन्तु क़ुर्आन करीम तो हमें बता रहा है कि आंहज़रत (स.अ.व.) के युग में भी मसीही लोग सदमार्ग त्याग बैठे थे और पथ भ्रष्ट हो चुके थे, जैसा कि फ़रमाया:-

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ

(सूरह अलमाइदह रुकू-10)

अर्थात् "उन लोगों ने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा तीन में से एक है।"

अत: सिद्ध हुआ कि कम से कम नबी करीम (स.अ.व.) के मुबारक युग से पहले-पहले मसीह मृत्यु पा चुका था। भली-भांति विचार करो कि मसीह का यह उत्तर स्पष्ट साक्ष्य प्रस्तुत कर रहा है कि ईसाई लोग मसीह की मृत्यु के पश्चात् बिगड़े हैं। अब प्रश्न यह है कि क्या ईसाई बिगड़ चुके हैं या नहीं? यदि नहीं बिगड़े तो उचित, मसीह भी शायद जीवित होगा, परन्तु यदि वे बिगड़ चुके हैं और अवश्य बिगड़ चुके हैं तो फिर इस बात को स्वीकार किए बिना चारा नहीं कि मसीह मृत्यु पा चुका है। इसके अतिरिक्त यदि यह मान लिया जाए कि मसीह अब तक आकाश पर जीवित मौजूद है और अन्तिम युग में प्रलय से पूर्व उतरेगा तो फिर इसके साथ यह भी मानना पड़ेगा कि वह प्रलय से पूर्व ही अपनी उम्मत के बिगड़ जाने से अवगत हो जाएगा और उसे ज्ञात हो जाएगा कि मेरी उम्मत मुझे ख़ुदा बना रही है तो ऐसी अवस्था में वह अपनी अज्ञानता को किस प्रकार प्रकट कर सकता है। निश्चय ही मसीह की ओर से (ख़ुदा की शरण चाहते हैं) यह सरासर एक झूठ होगा। यदि वह ज्ञान रखने के बावजूद अज्ञानता को प्रकट करे। एक गन्दे से गन्दा मनुष्य भी ख़ुदा के समक्ष ऐसे स्पष्ट झूठ का साहस नहीं कर सकता, तो फिर मसीह जो ख़ुदा का प्रिय भक्त और उसका रसूल था वह किस प्रकार ऐसा स्पष्ट झूठ बोलेगा। अत: विचार कर, चिन्तन कर और सन्देह करने वालों में से न हो।

## हदीस में इस आयत की व्याख्या

एक हदीस भी इस आयत के अर्थों को प्रकाशमान दिन की भांति प्रकट कर देती है और वह यह है कि हदीस में आता है कि नबी करीम (स.अ.व.) ने फ़रमाया कि प्रलय के दिन मैं हौज़े कौसर पर खड़ा हूँगा और अपने अनुयायियों को इस मुबारक झरने का पानी बांट रहा हूँगा, अचानक लोगों का एक समूह मेरे सामने आएगा जिन्हें फ़रिश्ते दूसरी ओर धकेल कर ले जा रहे होंगे मैं उन्हें देखकर चिल्लाने लगूंगा असैहाबी, उसैहाबी अर्थात् "ये तो मेरे सहाबा हैं, ये तो मेरे सहाबा हैं।" इस पर फ़रिश्ते कहेंगे-

اِنَّكَ لَا تَدْرِى مَا اَحْدَثُوْا بَعْدَكَ اِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوْا مُرْتَدِّيْنَ عَلٰى اَعْقَابِهِمْ

अर्थात् "आप नहीं जानते कि इन लोगों ने आप के पश्चात् क्या कुछ किया, ये तो आप के पश्चात् अपनी एड़ियों के बल फिर गए थे।"

नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि यह सुनकर मैं वही कहूँगा जो एक नेक बन्दे ईसा पुत्र मरयम ने कहा कि :-

كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّادُمْتُ فِيْهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ

*अर्थात् "जब तक मैं उनके बीच रहा मैं उनकी देखभाल करता रहा परन्तु फिर जब हे ख़ुदा तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर तू ही उन को देखने वाला था।" (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)*

देखिए नबी करीम (स.अ.व.) ने वही शब्द अपने लिए प्रयोग किए जो हज़रत ईसा ने किए। अत: स्पष्ट है कि नबी करीम (स.अ.व.) आकाश पर नहीं उठाए गए अपितु मृत्यु ने ही आपको आपके अनुयायियों से पृथक किया था। यही अर्थ ईसा के बारे में लेना चाहिए तथा विचार करो कि नबी करीम (स.अ.व.) ने अपना हाल किस प्रकार ईसा पुत्र मरयम के हाल के समान बताया है। आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया कि जिस प्रकार ईसा इब्ने मरयम अपनी अज्ञानता प्रकट करेगा उसी प्रकार मैं भी अपनी अज्ञानता प्रकट करूँगा तथा यह ऊपर बताया जा चुका है कि यदि मसीह नासिरी अन्तिम युग में उतरे तो वह अवश्य अपनी उम्मत के बिगड़ जाने से प्रलय से पूर्व ही अवगत हो जाएगा। अत: उसके लिए प्रलय के दिन अपनी अज्ञानता प्रकट करना एक खुला झूठ है। क्या मसीह के अनुयायियों में से कोई व्यक्ति उस समय खड़े होकर यह नहीं कह सकता कि हे ख़ुदा तेरे इस रसूल ने एक ऐसा झूठ बोलने का साहस किया है कि निकट है कि पृथ्वी और आकाश दोनों फट जाएं। यह अन्तिम युग में दोबारा संसार में आया तथा उसने हमें उसकी ख़ुदाई मानते और लोगों से मनवाते देखा, जिसके कारण उसने हमारे विरुद्ध युद्ध किया तथा चालीस वर्ष तक उसने पृथ्वी पर कोतूहल मचाए रखा तथा उसने उस समय तक अपनी तलवार म्यान में नहीं की जब तक कि उसने उन समस्त लोगों को तलवार के घाट नहीं उतार दिया जिन्होंने उसकी बात को अस्वीकार किया, परन्तु अब ख़ुदावन्द यह अपनी अज्ञानता प्रकट करता है।" खेद हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम के विरोध में लोग इतने अन्धे हो गए हैं कि ख़ुदा के एक महानतम नबी पर आरोप लगाने से भी नहीं रुके परन्तु मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम को सच्चा मानना स्वीकार न किया। क़ुर्आन करीम क्या उचित फ़रमाता है:-

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٣٠

(सूरह यासीन रुकू-2)

अर्थात् "खेद लोगों पर कि वे प्रत्येक रसूल के साथ उपहास ही करते आए हैं।"

बहस के अन्तर्गत आयत तवफ़्फ़ा के अर्थ भी स्पष्ट कर रही है, क्योंकि नबी करीम (स.अ.व.) ने अपने बारे में ये ही शब्द प्रयोग किए हैं कि अर्थात् जब तूने मुझे मृत्यु दे दी। यदि तवफ़्फ़ा के अर्थ मृत्यु देने के न होते अपितु उठा लेने के होते, जैसा कि दावा किया जाता है तो नबी करीम (स.अ.व.) अपने लिए ये शब्द कदापि प्रयोग न करते, क्योंकि आप तो आसमान की ओर नहीं उठाए गए अपितु दूसरे लोगों की भांति पृथ्वी पर ही मृत्यु को प्राप्त हुए।

**यदि मसीह को ख़ुदा मान लिया जाए तो फिर भी वह मृत्यु से नहीं बचता**

यहां तक तो मसीह का मनुष्य होने के नाते वर्णन हुआ है परन्तु क़ुर्आन करीम एक ऐसी परिपूर्ण किताब है जो किसी पहलू को नहीं छोड़ती। आजकल विश्व का एक बड़ा भाग मसीह अलैहिस्सलाम को ख़ुदा मानता है। अत: इस हैसियत में भी क़ुर्आन करीम उसकी मृत्यु की चर्चा करता है ताकि समझाने का अन्तिम प्रयास प्रत्येक प्रकार से पूर्ण हो जाए। फ़रमाता है -

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ
اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ

(सूरह नहल रुकू-2)

अर्थात् "जिन उपास्यों को ये लोग अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हैं (अर्थात् उनकी उपासना करते हैं) वे कोई वस्तु पैदा नहीं कर सकते अपितु वे स्वयं पैदा किए गए हैं, वे मुर्दा हैं जीवित नहीं हैं और वे इतना भी नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे।"

यह आयत उन समस्त लोगों की मृत्यु की सूचना देती है जो बतौर उपास्य नबी करीम (स.अ.व.) के युग में पूजे जाते थे। स्पष्ट है कि मसीह उन्हीं में से एक हैं। यदि कुछ लोग इस आयत के बारे में यह ऐतिराज़ करें कि इसमें मूर्तियों आदि की चर्चा है न कि उन लोगों की जो बतौर ख़ुदा के पूजे जाते हैं तो यह एक स्पष्ट ग़लती होगी, क्योंकि अल्लाह तआला इस आयत में स्पष्ट तौर पर फ़रमाता है :-

وَمَا يَشْعُرُوْنَ. اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ

अर्थात् "जो लोग पूजे जाते हैं वे इतना भी नहीं जानते कि उन्हें कब उठाया जाएगा।"

(शेष आगे ...)

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

# SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

**AYURVEDIC PAIN BALM**

Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

## RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

## INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
# 2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

*Fawad Anas Ahmed*

## GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS

# YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH :2328-1016

## शान्ति का अवतार

# विश्व-शान्ति के सम्बन्ध में पवित्र/इस्लाम क़ुर्आन की शिक्षाएं

फरहत अहमद आचार्य

आज संसार सत्य-मार्ग, न्याय और सच्चाई की खोज कर रहा है। जिधर देखो अन्धकार ही अन्धकार जगत पर छाया हुआ है। कहीं जातिगत विवाद हैं तो कहीं भाषा के आधार पर झगड़े, कहीं धर्म के नाम पर दंगे, तो कहीं पड़ोसी देशों में परस्पर वैमनस्य और घृणा-भाव। सारांश यह है कि मनुष्य ने अपने चारों ओर विनाश के ऐसे भंयकर गढ़े खोद रखे हैं कि उन्हें भर कर एक सुगम रास्ता बनाना उसकी शक्ति से बाहर लगता है। धार्मिक कट्टरवाद ने जिस संकीर्णता को जन्म दिया है, इसके फलस्वरूप निदर्यता और निष्ठुरता का विकराल राक्षस विश्व में चारों और निर्भीक हो कर विचरण करने वाला है। इसके कारण हथियारों की ऐसी होड़ आरम्भ हुई कि उस पर अंकुश लगाना तो दूर की बात है, विश्व की बड़ी-बड़ी शक्तियां इस होड़ को कम करने के मुद्दे पर भी एक प्लेटफार्म पर इकट्ठी नहीं हो सकती। ऐसे वातावरण में मनुष्य को क्या नीति अपनानी चाहिए? क्या उसे निराश हो कर अपने प्रयत्न त्याग देने चाहिए या उसके लिए आशा की कोई किरण है?

उन्नीसवीं शताब्दी का आरम्भ लगभग पूरे विश्व में बेचैनी, आतंक और उपद्रव से हुआ। एक ओर हमारे प्रिय देश भारत पर अंग्रेज़ों का शासन था, तो दूसरी ओर हमारे ही कुछ भाई बन्धु चाहे वे हिन्दू हों अथवा मुसलमान, परस्पर लड़ने-मरने पर तुले हुए थे। इसी प्रकार एक ही धर्म के लोग अर्थात विभिन्न सम्प्रदायों के लोगों ने भी एक दूसरे के विरुद्ध शस्त्र धारण किये हुए थे। ऐसा प्रतीत होता था कि धर्म का अर्थ ही आतंक और उपद्रव उत्पन्न करना और मानव-जाति का रक्तपात करना है। यह कहना गलत न होगा कि धार्मिक लोगों का यही व्यवहार नास्तिकता और धर्मविमुखता को जन्म देने का उत्तरदायी है। ऐसे भंयकर वातावरण में जमाअत अहमदिय्या के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने प्रेम और सद्भावना से भरपूर यह घोषणा की :

“मैं सम्पूर्ण आदर और विनम्रता से मुसलमान और ईसाई विद्वानों तथा हिन्दुओं और आर्यसमाजी पंडितों को यह घोषणा-पत्र भेज कर यह सूचना देता हूँ कि मैं नैतिक, आस्थागत और ईमान सम्बन्धी कमजोरियों और गलतियों को दूर करने के लिए संसार में भेजा गया हूँ। मैं इस बात का विरोध करता हूँ कि धर्म के नाम पर तलवार उठाई जाए और लोगों का ख़ून बहाया जाए। मैं समस्त मुसलमानों, ईसाईयों, हिन्दुओं और आर्यसमाजियों पर यह बात स्पष्ट करता हूँ कि संसार में मेरा कोई शत्रु नहीं है। मैं मानवजाति से इतना प्रेम करता हूँ जितना कि एक मेहरबान माँ अपने बच्चे से करती है बल्कि इससे भी बढ़कर। मैं केवल उन अन्ध विश्वासों का शत्रु हूँ जिनसे सच्चाई का ख़ून होता है। मानव समाज से सहानुभूति करना मेरा कर्त्तव्य है और झूठ, शिर्क, अन्याय और हर कुकर्म और अनैतिक कार्य से घृणा करना मेरा सिद्धान्त है।” (अरबईन, पृष्ठ 1-2)

संसार में शान्ति स्थापित करने के लिए यह अनिवार्य है कि धर्म के सम्बन्ध में कोई ज़बरदस्ती न की जाए। अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है :

"धर्म में किसी प्रकार की ज़बरदस्ती (की आज्ञा) नहीं, क्योंकि हिदायत (सन्मार्ग) और गुमराही (पथभ्रष्टता)

का अन्तर भली भान्ति स्पष्ट हो चुका है।" (सूरह अल्-बक़र :- 257)

फिर एक अन्य स्थान पर फरमाया- "लोगों को कह दो कि यह सच्चाई तेरे रब्ब की ओर से उतरी हुई है। अत: जो चाहे (इस पर) ईमान लाए और जो चाहे इन्कार कर दे।" (अल्-कहफ़-30)

धर्मजगत में शान्ति की स्थापना के लिए अनिवार्य है कि एक-दूसरे के उपास्यों और धार्मिक पेशवाओं को बुरे नाम से न याद किया जाए उनको बुरा भला न कहा जाए। अल्लाह तआला ने इस विषय में मुसलमानों को यह सुन्दर शिक्षा दी है कि :

''और तुम उनको जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते (उपासना करते) हैं, गाली न दो अन्यथा वे शत्रु बन कर आज्ञानतावश अल्लाह को गालियां देंगे।'' (अल्-अन्आम-109)

यद्यपि अल्लाह की शिक्षा के अनुसार मूर्तियों की कोई गरिमा या महानता नहीं है, मगर फिर भी ख़ुदा ने मुसलमानों के यह आदेश दिया है कि वे मूर्तियों के बारे में कदापि अपशब्द न कहें, अपितु मूर्ति पूजकों को स्नेहभाव से समझाएं। अन्यथा मूर्तिपूजक आक्रोश में आकर ख़ुदा को गालियां निकालेंगे और इस तरह स्वयं मुसलमान ही अपशब्दों द्वारा अल्लाह की निन्दा कराने का मूल कारण बनेंगे और समाज का माहौल खराब होगा वह अलग।

विश्व-शान्ति के सम्बन्ध में पवित्र क़ुर्आन ने एक शिक्षा यह भी दी है कि संसार में जितने भी अवतार, पैगम्बर, ऋषि, मुनि आए, उन्हें आदर और सम्मान की दृष्टि से देखा जाए और उनके मध्य कोई भेदभाव न किया जाए। पवित्र क़ुर्आन का कथन है :

"अर्थात् हे मुसलमानो ! तुम यह कहो कि हम सब नबियों पर ईमान लाते हैं और उनमें से किसी को एक को दूसरे से अलग नहीं समझते, कि कुछ को मानें और कुछ को न मानें। (आले-इम्रान-85)

इस्लाम सुलह पैदा करने वाला वह पवित्र धर्म है जिसने कभी किसी धर्म के प्रवर्तक पर आक्रमण नहीं किया और क़ुर्आन वह पवित्र पुस्तक है जिसने विभिन्न क़ौमों में मैत्रीभाव की नींव डाली और प्रत्येक धर्म के अवतार को स्वीकार कर लिया। (पैग़ामे-सुलह-पृष्ठ 30)

## विश्व शान्ति के सम्बन्ध में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का संदेश

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने जीवन के अन्तिम 'हज' के अवसर पर विश्व-शान्ति और मानवता की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए जो अनुपम शिक्षा दी, वह इन शब्दों में है :

"मेरी बात को ध्यानपूर्वक सुनो! मैं नहीं जानता कि इस वर्ष के उपरान्त फिर कभी तुम लोगों के मध्य इस मैदान में खड़े हो कर भाषण दे पाऊँ। आज मैं जाहिलीयत के समस्त रीति-रिवाजों को अपने पांव तले रौंदता हूँ। हे लोगो ! तुम्हारा रब्ब एक है और तुम्हारा बाप (अर्थात आदम) भी एक था। सुनो! किसी अरबवासी को किसी ग़ैर-अरबवासी पर कोई विशिष्टता प्राप्त नहीं और न किसी ग़ैर अरबवासी को किसी अरबवासी पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त है। न काले को गोरे पर और न गोरे को काले पर कोई विशेषता प्राप्त है। तुम्हारी सम्पत्ति, तुम्हारी जानें और तुम्हारी मान-मर्यादा क़यामत तक एक दूसरे पर हराम हैं।"

जमाअत अहमदिय्या के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने कहा :-

"मैं सच-सच कहता हूँ कि जो व्यक्ति इस समय धर्म के लिए लड़ाई करता है या किसी लड़ाई का समर्थन करता है या प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से ऐसा करने का परामर्श देता है या हृदय में ऐसी इच्छाएं रखता है वह ख़ुदा और इसके रसूल का अवज्ञाकारी है।" (हक़ीक़तुल महदी, पृ. न: 4)

फिर फ़र्माया :-

"हे मुसलमानो! अपने धर्म के प्रति सहानुभूति तो रखो, परन्तु सच्ची सहानुभूति रखो। क्या इस विवेकशील युग में धर्म के लिए यह उचित है कि हम तलवार से लोगों को मुसलमान बनाना चाहें। ख़ुदा से डरो और यह अपमानजनक आरोप इस्लाम पर मत लगाओ। पवित्र क़ुर्आन की कदापि यह शिक्षा नहीं है और न ही हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह कहा कि खूनी महदी या मसीह आएगा जो लोगों को बलपूर्वक मुसलमान बनाएगा और उनकी हत्या करना उसका धर्म होगा।"

(तिरयाकुल कुलूब-पृष्ठ 28)

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने क़ुर्आन और हदीस (हज़रत मुहम्मद साहिब के कथन) के अनुसार मुसलमानों के सम्मुख जब यह मत रखा कि किसी 'ख़ूनी महदी' का आना इस्लाम धर्म की शिक्षा के विरुद्ध है और इस्लाम के प्रसार के लिए शस्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस्लाम, धर्म को फैलाने के लिए मनुष्यों के ख़ून बहाने का घोर विरोध करता है, तो कट्टरवादी मुल्लाओं ने इस शान्ति के अवतार और मानवता के रक्षक पर काफ़िर, अधर्मी और इस्लाम धर्म से निष्कासित होने का आरोप लगाया।

इस पर आप ने कहा :-

'खेद है कि जब मैंने हिन्दुस्तान के मुसलमानों को यह ख़बर सुनाई है कि कोई ख़ूनी महदी या मसीह संसार में नहीं आने वाला, अपितु एक व्यक्ति सद्भावना के साथ आने वाला था, जो 'मैं हूँ', तब से ये नासमझ मुल्ला मुझ से द्वेष रखते हैं और मुझे काफ़िर कहते है और दीन (इस्लाम) से निष्कासित करते हैं। बड़ी विचित्र बात है कि यह लोग मानवता के रक्तपात से प्रसन्न होते हैं, परन्तु यह क़ुर्आन की शिक्षा नहीं हैं।

(तोहफ़ा-ए-कैसरिय: पृ. 13-14)

**जमाअत अहमदिय्या के चौथे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब फ़र्माते हैं:**

"इन सब इस्लाम विरोधियों की आवाज़ों को सुनिए और फिर मौलाना मौदूदी उपरोक्त पंक्तियों का अध्ययन कीजिए । क्या यह बिल्कुल वही आक्षेप नहीं जो इससे पहले कई इस्लाम विरोधियों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निर्दोष व्यक्तित्व पर लगाया था, अपितु इससे अधिक भयानक है आपके पावन-चरित्र पर आक्रमण करने वाला है। आप इस्लाम विरोधियों की रचना पढ़ कर देख लीजिए। कहीं भी आपको हज़रत मुहमम्द सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पावन-चरित्र की कथित दुर्बलता और चमत्कारों की निर्बलता का ऐसा गम्भीर चित्र नहीं दिखाई देगा जैसा कि मौलाना मौदूदी ने खींचा है। मौलाना मौदूदी के अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का निरन्तर तेरह वर्ष तक इस्लाम का प्रचार दिलों को जीतने में विफल रहा। परन्तु तलवार और बल ने हृदयों को अभिभूत कर लिया। उपदेश के प्रभावी ढंग तो रेगिस्तानी हवाओं में लुप्त हो गए,

परन्तु भालों की नोक ने दिलों की गहराई तक इस्लाम को पहुँचा दिया। आप के द्वारा प्रदर्शित प्रबल प्रमाण तो दिलों में जगहं न बना सके, परन्तु गदा के प्रहार ने शस्त्राणों को तोड़ कर उनकी बुद्धि को इस्लाम की ओर आकृष्ट कर दिया। स्पष्ट तर्क-वितर्क उनके विवेक को प्रभावित न कर सके, परन्तु घोड़ों की टापों ने उनको इस्लाम की सत्यता के सभी रहस्य समझा दिए। वाणी की मधुरता, भाषा की भावुकता तथा ओजस्वी भाषण दिलों को इतना द्रवित न कर सके कि इस्लाम की ज्योति उनमें चमक उठती। यहां तक कि स्वयं अल्लाह की ओर से प्रकट होने वाले आश्चर्यजनक चमत्कार भी असफल हो गए और लेशमात्र भी परिवर्तन न कर सके। जब इस्लाम के प्रचारक ने हाथ में तलवार ली, तो दिलों से धीरे-धीरे बुराई और शरारत का जंग छूटने लगा। खेद है कि कितनी व्यंग्यात्मक और उपहासमय है यह कल्पना और कितने अपमानजनक हैं ये शब्द कि जिन को पढ़ कर रोना आता है कि एक इस्लामी नेता की क़लम से ये शब्द निकले हैं जो रसूल की मुहब्बत का दावेदार है।"

(पुस्तक - मज़हब के नाम पर ख़ून)

आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व एक आशिक़े रसूल और आशिक़े क़ुर्आन हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने धर्म-जगत में शान्ति का दूत बन कर इस्लाम की अनुपम और हृदयस्पर्शी शिक्षा को संसार के सम्मुख रखा। बहुत खेद से कहना पड़ता है कि इन तथाकथित राजनीतिज्ञों और अवसरवादी एवं स्वार्थी मुल्लाओं ने न केवल इस ईश्वर-भक्त की आवाज़ को ठुकराया अपितु उसका विरोध करने और उसे दु:ख पहुँचाने में कोई कसर न छोड़ी।

## इस्लामी जिहाद की वास्तविकता

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम इस्लामी जिहाद की वास्तविकता को स्पष्ट करते हुए फ़र्माते हैं :-

"कुछ नासमझ जो इस्लाम पर जिहाद का आरोप लगाते हैं और कहते हैं कि यह सब लोग तलवार से मुसलमान किए गए थे। खेद है कि वे अन्याय में और सत्य को छिपाने में मर्यादा की सीमाओं का उल्लंघन कर गए हैं। खेद! खेद!! उनको क्या हो गया कि वे जानबूझ कर वास्तविक घटनाओं से मुख फेर लेते हैं। हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरब देश में एक बादशाह के रूप में प्रकट नहीं हुए थे, जिस से यह विचार किया जाता कि चूंकि राजकीय शक्ति और वैभव आप के साथ था, और लोग जान बचाने के लिए आपके ध्वज के नीचे आ गए थे। प्रश्न तो यह है कि जब आपने अकेले, दीनहीन और असहाय अवस्था में ख़ुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) और अपने अवतारवाद का प्रचार आरम्भ किया था तो उस समय किस तलवार के भय से लोग आप पर ईमान ले आए थे। (अर्थात् मानने लगे थे) और यदि उन्होंने आप को स्वीकार नहीं किया था तो फिर बल प्रयोग के लिए किस राजा से कोई सेना मंगवाई गई थी या सहायता मांगी गई थी।

हे सत्य के जिज्ञासुओ! तुम जान लो कि यह सब उन लोगों के झूठे आरोप हैं जो इस्लाम के कट्टर शत्रु हैं। इतिहास पर दृष्टि डालों और देखो कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो वही अनाथ बालक थे जिनके पिता आप के जन्म के कुछ दिन पूर्व ही परलोक सिधार गए और माता भी कुछ महीने का बालक छोड़ कर चल बसी थीं। तब वह बालक जिसके साथ ख़ुदा का हाथ था, बिना किसी सहारे के केवल अल्लाह की

शरण में पलता रहा। इस मुसीबत और अनाथ अवस्था में कुछ लोगों की बकरियां चराईं और ख़ुदा के अतिरिक्त कोई आप की देखभाल करने वाला नहीं था और पच्चीस वर्ष की आयु तक पहुँचने पर भी आप के किसी चाचा ने भी आपको अपनी लड़की न दी, क्योंकि ऐसी स्थिति में यह प्रतीत होता है कि आप इस योग्य नहीं थे कि गृहस्थ-जीवन का बोझ उठा सकें और फिर आप बिल्कुल पढ़े लिखे न थे और कोई व्यवसायिक जानकारी भी नहीं रखते थे। जब आप चालीस वर्ष की आयु तक पहुंचे तो आप का हृदय अल्लाह की ओर आकृष्ट किया गया। एक गुफ़ा, मक्का से कुछ दूरी पर स्थित है, जिसका नाम 'हिरा' है। आप अकेले वहां जातें और गुफ़ा के भीतर छुप जाते और अपने ख़ुदा को याद करते। एक दिन उसी गुफ़ा में आप छुप कर इबादत (भक्ति) कर रहे थे कि ख़ुदा आप पर प्रकट हुआ और आप को आदेश मिला कि संसार सन्मार्ग से भटक गया है और धरती पापों से भर गई है। अत: मैं तुझे अपना 'रसूल' बनाकर भेजता हूं। अब तू लोगों को सावधान कर कि वे दैवी प्रकोप से पूर्व अल्लाह की ओर ध्यान दें। यह आदेश मिलने पर आप भयभीत हो गए कि मैं तो एक अशिक्षित व्यक्ति हूँ और निवेदन किया कि पढ़ना नहीं जानता। तब अल्लाह ने आपके हृदय में सभी आध्यात्मिक ज्ञान भर दिए और आप के हृदय को प्रकाशमान कर दिया। फ़लस्वरूप आपकी पवित्र आत्मिक शक्ति के प्रभाव से दीन दु:खी लोग आपकी छत्रछाया में आने शुरू हो गए जो बड़े-बड़े आदमी थे उन्होंने विरोध और शत्रुता पर कमर कस ली। यहां तक कि आपका वध कर देना चाहा और बहुत से स्त्री-पुरुषों की यातनाएं देकर हत्या कर दी गई और अन्तत: आपकी हत्या करने के लिए आपके घर का घेरा डाला गया, परन्तु जिस को अल्लाह रखे उसको कौन चखे। ख़ुदा ने आपको अपनी विशेष वाणी द्वारा सूचित किया कि इस नगर से निकल जाओ और मैं प्रत्येक पग पर तुम्हारे साथ हूँगा। अत: आप मक्का से हज़रत 'अबू बकर' को लेकर निकल आए और तीन रात तक 'सौर' नामक गुफ़ा में छुपे रहे। शत्रुओं ने पीछा किया और एक गुप्तचर को लेकर गुफ़ा तक पहुँच गए। उस व्यक्ति ने गुफ़ा तक पद-चिन्हों के आधार पर पहुँचा दिया और कहा कि इस गुफ़ा में तलाश करो क्योंकि इससे आगे पद-चिन्ह नहीं है और यदि इसके आगे गया है तो आकाश पर चढ़ गया होगा परन्तु अल्लाह की अद्भुत लीलाओं को कौन सीमित कर सकता है। ख़ुदा ने एक ही रात में ऐसा अद्भुत चमत्कार दिखाया कि मकड़ी ने अपने जाले से गुफ़ा का सारा द्वार बन्द कर दिया और कबूतरी ने गुफ़ा के मुँह पर घोंसला बना कर अण्डे दे दिए और जब गुप्तचर ने लोगों को गुफ़ा के भीतर जाने के लिए प्रोत्साहित किया तो को एक व्यक्ति बोला कि यह गुप्तचर तो पागल हो गया है। मैं तो इस जाले को गुफ़ा के मुख पर उस समय से देख रहा हूँ जबकि (हज़रत) मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अभी पैदा भी नहीं हुआ था। इस बात को सुन कर सब लोग तितर-बितर हो गए और गुफ़ा के अन्दर जाने का विचार छोड़ दिया।

इस के उपरान्त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गुप्त रूप से मदीना पहुँचे और मदीना के अधिंकांश लोगों ने आपको स्वीकार कर लिया। इस पर मक्का वालों का क्रोध भड़का कि हमारा शिकार हमारे हाथ से निकल गया। फिर क्या था वे दिन-रात योजनाएं और षड्यन्त्र रचने में लग गए कि किसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हत्या कर दें और जो थोड़े बहुत मक्का वासी आप पर ईमान लाए थे, वे भी मक्का को छोड़ कर अन्य देशों की ओर चले गए। कुछ लोगों ने हब्शा (Ethiopia) के बादशाह के यहां शरण ले ली थी और कुछ लोग जो कि साधन नहीं जुटा पाए वे मक्का में ही रहे और उन्हें बहुत दु:ख दिया गया। पवित्र क़ुर्आन

में इनका उल्लेख किया गया है कि किस प्रकार वे दिन रात सताए जाते थे।

जब काफ़िरों का अत्याचार इस सीमा तक पहुँच गया तो ख़ुदा ने जो अन्तत: अपने बन्दों पर दया करता है अपने पैग़म्बर को अपनी विशेष वाणी द्वारा सूचित किया कि इन सताए हुए निर्दोष लोगों की चीखो पुकार मुझ तक पहुँच गई। अत: आज मैं अनुमति देता हूँ कि तुम भी उनका मुकाबला करो और याद रखो कि जो लोग निर्दोषों पर तलवार उठाते हैं वे तलवार से ही हलाक किए जाएंगे। मगर तुम कोई अत्याचार न करना क्योंकि ख़ुदा अत्याचारियों को मित्र नहीं बनाता। यह है इस्लामी जिहाद की वास्तविकता जिस को अत्यन्त बुरे ढंग से प्रस्तुत किया गया है। मैं नहीं जानता कि हमारे विरोधियों ने कहां से और किस से सुन लिया कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है हालांकि ख़ुदा तो पवित्र क़ुर्आन में फ़र्माता है- इस्लाम धर्म में ज़बरदस्ती नहीं है।" (अल बक़र: - 257)

(पैग़ामे सुलह – पृष्ठ 26-30)

इस प्रकार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने ठोस प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर दिया कि इस्लाम धर्म की शान्तिप्रद और अहिंसक शिक्षाओं में न तो किसी ख़ूनी महदी के आने का प्रावधान है और न ही यह धर्म कभी भी किसी प्रकार की हिंसा, बल-प्रयोग और तलवार के ज़ोर से फैला है। प्रिय पाठको! हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने न केवल यह कि इस्लाम के अनुपम और हरे-भरे बाग़ के रास्तों पर पड़े हुए उन कांटो को साफ़ किया है जो कि अपनो और परायों ने बड़ी बेदर्दी से इस बाग़ में बिछाए थे। बल्कि आप ने पवित्र क़ुर्आन की शिक्षाओं के अनुसार विश्व शान्ति के सुझाव दिए।

## शान्ति-स्थापना के लिए सुन्दर सुझाव

1 सभी धर्म-प्रवर्त्तकों और पवित्र धर्म-ग्रन्थों का सम्मान किया जाए।

आपने फ़रमाया कि विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि सभी धर्मों के प्रवर्तकों तथा उनके पवित्र धर्म-ग्रन्थों का सम्मान और सत्यापन सुनिश्चित किया जाए। आप फ़र्माते हैं:-

"यह सिद्धान्त अत्यन्त सुन्दर और शान्तिप्रद और परस्पर सद्भाव की बुनियाद डालने वाला तथा नैतिक अवस्थाओं को समर्थन देने वाला है कि हम उन सभी अवतारों को सच्चा समझ लें जो कि इस संसार में आए। चाहे वे भारत वर्ष में प्रकट हुए हों अथवा फ़ारस या चीन में या किसी अन्य देश में, और ख़ुदा ने करोड़ों हृदयों में उन का सम्मान और प्रतिष्ठा बिठा दी तथा उन के धर्म की जड़ क़ायम कर दी और कई शताब्दियों तक वह धर्म चला आया। यही सिद्धान्त है जो क़ुर्आन ने हमें सिखलाया है। इसी सिद्धान्तानुसार हम प्रत्येक धर्म-प्रवर्त्तक को जिसका जीवन-चरित्र इस परिभाषा के अन्तर्गत आता है, सम्मान की दृष्टि से देखते हैं चाहे वे हिन्दुओं के धर्म प्रवर्त्तक हों या फ़ारसियों के धर्म के या चीनियों के धर्म के, या यहूदियों के धर्म के या ईसाइयों के धर्म के। (तोहफ़ा-ए-क़ैसरिया पृष्ठ 7)

## हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम के वेदों के प्रति विचार

आप फ़र्माते हैं : "हम वेदों को भी ईश्वर की ओर से मानते हैं और उनके ऋषियों को सम्मान योग्य एवं पवित्र समझते हैं। अल्लाह की शिक्षानुसार हमारा दृढ़ विश्वास है कि वेद मानव के बनाए हुए नहीं हैं। मनुष्य के बनाए हुए में यह शक्ति नहीं होती कि हज़ारों दिलों को अपनी ओर आकर्षित कर ले।"

श्री कृष्ण जी के सम्बन्ध में फ़रमाते हैं :-

"श्री कृष्ण जी अपने युग के नबी और अवतार थे और ख़ुदा उनसे वार्तालाप करता था।"

हज़रत बाबा नानक जी के सम्बन्ध में आप फ़रमाते है :-

"इस बात में कदापि कोई सन्देह नहीं हो सकता कि बाबा नानक एक उच्च, शीलवान तथा पवित्र महात्मा थे तथा उन लोगों में से थे जिन को सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने प्रेम का रस पिलाता है। वे हिन्दू व इस्लाम धर्म में सुलह कराने आए थे। परन्तु ख़ेद कि अगर उनकी पवित्र शिक्षाओं से कुछ लाभ उठाया जाता तो आज हिन्दू और मुसलमान सब एक होते।" (पैग़ामे सुलह, पृष्ठ 7-8)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के प्रति प्रेम व्यक्त करते हुए फ़र्माते हैं :-

"जितना ईसाइयों को हज़रत यसू मसीह से प्रेम करने का दावा है, वही दावा मुसलमानों को भी है। मानो आप का अस्तित्व ईसाइयों और मुसलमानों में एक सांझी सम्पत्ति की तरह है और मुझे सर्वाधिक अधिकार है क्योंकि मेरी तबीयत यसू मसीह में डूबी है और यसू की मुझ में।" (तौहफ़ा-ए-कैसरिया, पृष्ठ 23)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि शान्ति स्थापना के लिए आवश्यक है कि मुसलमान सभी अवतारों तथा उनके पवित्र ग्रन्थों का आदर करें। इसी प्रकार दूसरे धर्मानुयायी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तथा पवित्र क़ुर्आन के सम्मान में कोई अपशब्द न कहें। यह सिद्धान्त ऐसा शान्तिप्रद सिद्धान्त है कि जिसके परिणाम स्वरूप वर्तमान युग में वास्तविक शान्ति स्थापित हो सकती है। परन्तु बड़े दु:ख से कहना पड़ता है कि आज जमाअत अहमदिय्या के अतिरिक्त न तो दूसरे मुसलमान इस सिद्धान्त पर क़ायम हैं और न ही अन्य धर्मानुयायी इस स्वर्णिम सिद्धान्त का पालन करते हैं। मुसलमानों की तो यह स्थिति है कि जब हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने श्री कृष्ण तथा श्री रामचन्द्र जी का ख़ुदा तआला के नबियों में से होना प्रमाणित किया और वेदों की पवित्रता और पुण्यता को स्थापित किया तो चारों ओर से 'काफ़िर' 'काफ़िर' की आवाज़ें आने लगीं। परन्तु जब जमाअत अहमदिय्या डंके की चोट पर इस बात की घोषणा करती है उसे किसी के 'काफ़िर' कहने की कोई परवाह नहीं है। अगर अल्लाह नबियों और अवतारों तथा उनके लाए हुए धर्म-ग्रन्थों के सम्मान और प्रतिष्ठा के लिए जमाअत अहमदिय्या को अपने ख़ून की आख़री बूंद भी बहा देनी पड़े तो जमाअत इस बलिदान के लिए तैयार है। इसी प्रकार जमाअत अहमदिय्या का अन्य धर्मानुयायियों से भी यही निवेदन है कि जो प्रेम सम्मान हम आप के अवतारों और ऋषियों-मुनियों को देते हैं और जिस प्रकार हम आपके धर्म-शास्त्रों का आदर करते हैं, वैसा ही हम प्रेम और सम्मान-भाव हम आप लोगों से भी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन के प्रति चाहते हैं।

## संवेदनापूर्ण उपदेश

जमाअत अहमदिय्या के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम के इस करुणामय उपदेश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

"हे प्रियजनो! प्राचीन अनुभव और बार-बार के परीक्षणों ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि विभिन्न कौमों के नबियों और अवतारों को अपमान से याद करना और उनके विषय में अपशब्द कहना एक ऐसा विष

है जो अन्तत: न केवल शरीर को नष्ट करता है, अपितु आत्मा को भी हताहत करके आध्यात्मिक और सांसारिक जीवन को नष्ट-भ्रष्ट करता है। वह राष्ट्र कभी सुखपूर्वक नहीं रह सकता जिसके वासी एक-दूसरे के धर्म-गुरुओं की बुराईयां और मान-हानि करने में व्यस्त हों और उन क़ौमों में कदापि सच्ची एकता नहीं हो सकती जिन में से एक क़ौम अथवा दोनों एक-दूसरे के नबी या ऋषि या अवतार को बुराई और अपशब्द के साथ याद करते रहते हैं। अपने नबी या गुरु का अपमान सुन कर कौन उत्तेजित नहीं होता? हार्दिक शुद्धता जिसे वास्तव में शुद्धता कहना चाहिए केवल उसी स्थिति में पैदा होगी जब कि आप लोग वेद के ऋषियों को सच्चे मन से ख़ुदा की ओर से स्वीकार कर लोगे। इसी प्रकार हिन्दू लोग भी अपनी संकीर्णता को त्याग कर हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत की पुष्टि कर लेंगे। स्मरण रहे कि तुम में और हिन्दू सज्जनों के बीच सुलह कराने वाला मात्र यही एक सिद्धान्त है और यही वह जल है जो मलिनता को धो देगा। (पैग़ामे सुलह, पृष्ठ 14-20)

## पूजा-स्थलों की प्रतिष्ठा और सम्मान

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने जहां धार्मिक सुधारकों और पवित्र धर्म-ग्रन्थों की प्रतिष्ठा और सम्मान को स्थापित किया है वहां पवित्र क़ुर्आन की शिक्षानुसार उनके पूजा-स्थलों की प्रतिष्ठा और सम्मान का भी ध्यान रखा है। इस संदर्भ में इस्लामी शिक्षा का उल्लेख करते हुए जमाअत अहमदिय्या के संस्थापक फ़रमाते हैं :-

"ख़ुदा फ़रमाता है कि सभी पूजा स्थलों का मैं ही संरक्षक हूँ और इस्लाम का कर्त्तव्य है कि यदि किसी ईसाई देश पर अधिकार करे तो उनके पूजा स्थलों को कोई हानि न पहुँचाए और रोक दे कि उनके गिरजे ध्वंस न किए जाएं और यही उपदेश हदीसों में भी मिलता है क्योंकि हदीसों से पता चलता है कि जब कोई मुस्लिम सेनापति किसी राष्ट्र के मुकाबले के लिए नियुक्त होता था तो उसको यही आदेश दिया जाता था कि वह ईसाइयों और यहूदियों के पूजा स्थलों और फ़कीरों और साधुओं के मठों को कोई हानि न पहुंचाएं। इससे स्पष्ट है कि इस्लाम किस प्रकार हठधर्मी के रास्तों से दूर है और वह ईसाईयों के गिरजा घरों और यहूदियों के पूजा स्थलों का वैसा ही संरक्षक है जैसा कि मस्जिदों का संरक्षक है। (चश्म-ए-मारिफ़त, पृष्ठ 393-394)

## किसी क़ौम की देश-भक्ति को संदिग्ध न समझा जाए

शान्ति के अवतार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने यह शिक्षा दी है कि शान्ति स्थापना के लिए आवश्यक है कि एक ही देश में रहने वाले विभिन्न लोगों में से किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह अपने दूसरे देशवासियों की देश-भक्ति को शंका की दृष्टि से देखे। इससे न केवल शान्ति समाप्त होती है बल्कि हम बाहरी शक्तियों को अपने पर हावी होने का निमन्त्रण देते हैं। जैसा कि आप फ़र्माते हैं :

"हिन्दू और मुसलमान इस देश में दो ऐसी क़ौमें हैं कि यह एक असम्भव विचार है कि किसी समय हिन्दू इकट्ठे हो कर मुसलमानों को इस देश से बाहर निकाल दें या मुसलमान इकट्ठे होकर हिन्दुओं को यहा से निर्वासित कर देंगे। जो व्यक्ति तुम दोनों क़ौमों में से दूसरी क़ौम के विनाश का इच्छुक है उसका उदाहरण उस व्यक्ति जैसा है जो किसी शाखा पर बैठ कर उसी को काटता है" (पैग़ामे सुलह, पृष्ठ 5)

# प्राचीन घटनाओं को दोहराया ना जाए

हमारे वर्तमान राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण को खराब करने वाले बहुत से कारणों में से एक कारण यह है कि प्राचीन धार्मिक घटनाओं और अन्याय और अत्याचार की कहानियों को चाहे वे वास्तविक हों या काल्पनिक, दोहराकर और प्रकाशित करके विभिन्न सम्प्रदायों में परस्पर घृणा पैदा की जाए। ऐसा करने से पुराने घाव हरे होकर तनाव और शत्रुता की विषैली हवा चलने लगती है। हालांकि प्राचीन इतिहास के वे अत्याचारी भी गुज़र गए और वे लोग भी जिन पर अत्याचार हुए थे अब वे इस संसार में नहीं रहे। अब वह ज़माना और वह परिस्थितियां भी नहीं रहीं। वर्तमान पीढ़ी का उन अत्याचार की घटनाओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस विषय में क़ुर्आन मजीद की अद्वितीय शिक्षा इस प्रकार है :-

"अर्थात् पहले लोग (चाहे वे छोटे थे या बड़े, अच्छे थे या बुरे) गुज़र गये। उनके कर्म उनके साथ और तुम्हारे कर्म तुम्हारे साथ (होंगे)। वे अपने कर्मों का फल पायेंगे और तुम अपने कर्मों का। तुमसे पिछले लोगों के कर्मों के विषय में कोई प्रश्न नहीं किया जायेगा।" (सूरह बक़र: आयत- 142)

क़ुर्आन मजीद की इस शिक्षा के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने संसार के लोगों को एकता और शान्ति की जो शिक्षा दी है वह इस प्रकार है :

"हम बड़े खेद से यह लिखना चाहते हैं कि जो मुसलमान बादशाहों के समय में सिक्खों से उस हुकूमत ने कुछ युद्ध किये या लड़ाइयां हुईं तो यह सभी घटनाएं वास्तव में सांसारिक विषय थे और स्वार्थ की प्रेरणा से उनमें बढ़ौतरी हुई थी और सांसारिक लोभ ने ऐसे झगड़ों को परस्पर बहुत बढ़ा दिया था, परन्तु सांसारिक लोभियों के पास पश्चाताप की भावना नहीं होती, बल्कि इतिहास बहुत-सी गवाहियाँ प्रस्तुत करता है कि प्रत्येक धर्म के मानने वालों में यह उदाहरण पाये जाते हैं कि राज या बादशाहत में भाई को भाई ने, और बेटे को बाप ने और बाप को बेटे ने कत्ल कर दिया। ऐसे लोगों को धर्म न्याय एवं परलोक की परवाह नहीं होती... प्रत्येक पक्ष के सुहृदय और सज्जल पुरुष को चाहिये कि स्वार्थी बादशाहों और राजाओं की कहानियों को बीच में लाकर आनायास ही उनके द्वेष से जो केवल सांसारिक लोभ पर आधारित था, हिस्सा न लें। वह एक क़ौम थी जो गुज़र गई। उनके कर्म उनके लिये और हमारे कर्म हमारे लिये। तुम्हें चाहिये कि अपनी खेती में उनके कांटों को न बोओ और अपने मन को मात्र इस कारण ख़राब न करो कि हम से पहले हमारी क़ौम में कुछ लोग ऐसा कर चुके हैं।" (सत् बचन, पृष्ठ 106)

इस स्वर्णिम सिद्धान्त के द्वारा हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने भविष्य में क़यामत तक के लिये अत्याचार के इस सिलसिले और द्वेष और अशान्ति की उन कड़ियों का अन्त कर दिया जो एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी की ओर चली जाती है और निर्दोष लोगों का बिना किसी दोष के अन्त करती है और फिर मानवीय ख़ून बहुत सस्ता होकर शहरों, गलियों और बाज़ारों में बहता है और मानव शैतान का रूप धारण करके हिंसा और विनाश का नंगा नाच करता है।

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT
Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO
JUICEPAK
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

**B.M.S.ENTERPRISES**
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

# 21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081
**Guddu Book Store**
All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools
**Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221**

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536
**MANUFACTURER and WHOLE SELLER**
Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

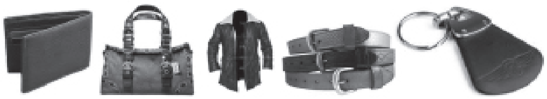

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443
Prop.
Hameed Khan Beejali

**Creative Computers**
Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993
Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक
**WASIMA STONE CRUSHER**
Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

ان ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ۔ انه كان بعباده خبيرا بصيرا
Mob. : 09986670102
09036915406
Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

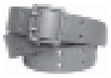

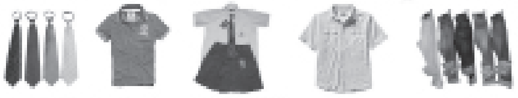

**Al-Fazal Garments**
*Specialist in* : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.
Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical, Main Road, Yadgir, Karnataka

# सुनहरा मौक़ा

# दारुल सनाअत, क़ादियान

**(Ahmadiyya Vocational Training Centre,**

**अहमदिया व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र)**

अल्लाह के फ़ज़्ल से बेरोजगार अहमदी नौजवानों के लिए दारुल सनाअत, क़ादियान (व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र) में हुनर सीखने का बहतरीन मौक़ा है जहां से हर साल कई नौजवान काम सीख कर अपने रोजगार से लग जाते हैं। यहाँ पर सिखाए जाने वाले कॉर्सेस के लिए सरकार से मान्यता प्राप्त सर्टिफिकेट भी दिया जाता है। और मात्र एक साल के अंदर अंदर पूरा कोर्स करवा दिया जाता है।

क़ादियान के बाहर से आने वाले विद्यार्थियों के लिए हॉस्टल तथा Mess का प्रबंध भी मौजूद है रिहाइश और खाने की कोई फीस नहीं है केवल कोर्स की बोर्ड फीस है जो आसान किस्तों में ली जाती है। तो ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूरी नहीं कर सके या आठवीं और दसवीं के बाद टेक्निकल कोर्स करने के इच्छुक हों दाखिले के लिए जल्दी संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी तालीम का भी इंतज़ाम मौजूद है इसके अलावा रोजाना इंग्लिश स्पीकिंग और पर्सनेलिटी डेवलपमेंट की क्लास भी ली जाती है।

नए सत्र जुलाई 2024-25 के लिए एडमिशन आरंभ हो गए हैं जिसकी क्लासस 16 जुलाई से शुरू हो जाएंगी जो नौजवान कोई हुनर सीख कर अपने जीवन को सफल बनाना चाहते हैं उनके लिए यह बहुत ही सुनहरा अवसर है। जल्दी संपर्क करें :-

फोन - 98727 25895, 8077546198

| Course | fees | Duration |
|---|---|---|
| Certificate in computer applications | 9000 | 1 year |
| Plumbing- | 6000 | 1 year |
| Electrician- | 6000 | 1 year |
| Welding- | 6000 | 1 year |
| Diesel mechanic | 10000 | 1 year |
| motor vehicle mechanic | 7000 | 1 year |
| Ac & refrigerator | 9000 | 1 year |

**नोट: फीस की रकम किस्तों में भी दी जा सकती है।**

**प्रिंसिपल, दारुल सनाअत क़ादियान**